माध्यमिक स्तर के शिक्षकों के व्यावसायिक उत्तरदायित्व एवं सामाजिक बुद्धि के सन्दर्भ में उनकी व्यावसायिक नैतिकता का अध्ययन

शिक्षाशास्त्र विषय में पीएचडी उपाधि की प्रतिपूर्ति हेतु
आईआईएमटी विश्वविद्यालय मेरठ को प्रस्तुत शोध कार्य की रुपरेखा

शोध पर्यवेक्षक	शोधकत्री
डा0प्रियंका बंसल	प्रियंका उपाध्याय
सहायक आचार्य कालेज ऑफ एजुकेशन	नामांकन संख्या
आईआईएमटी विश्वविद्यालय मेरठ	IMTU/2171360

वर्ष–2022

शोध केन्द्र

कालेज ऑफ एजुकेशन
आई.आई.एमटी.विश्वविद्यालय मेरठ

कम संख्या	पाठ्य वस्तु	पृष्ठ संख्या
1	प्रस्तावना	1—3
2	साहित्य समीक्षा	4—7
3	कार्य का समस्या कथन	8
4	शोध कार्य में प्रयुक्त प्रत्ययो का परिभाषीकरण	8—9
5	आवश्यकता	9—10
6	उद्देश्य	10—11
7	परिकल्पना	11
8	परिसीमायें	11—12
9	अनुसंधान की विधि	12—13
10	जनसंख्या	13
11	न्यादर्श	13
12	प्रस्तुत उपकरण	13
13	प्रयुक्त सांख्यकी विधियां	13
14	परिणाम निष्कर्ष एवं सुझाव	14
15	संदर्भ ग्रन्थ सूची	14—15

1.0—प्रस्तावना :—

देश के उत्थान व विकास के साथ ही समाज को शिक्षित व संस्कारवान बनाने में अध्यापक की अहम भूमिका होती है। अध्यापक समाज का वह शिल्पकार है जो शिक्षा के लिए विद्यालय आने वाले अबोध नन्हे बालक में शिक्षा व संस्कार के बीजों को अंकुरित करदेश का भविष्य तैयार करता है। बच्चे समाज का भविष्य कहे जाते हैं जिन्हें शिक्षा रूपी दर्पण दिखाने का कार्य एक अध्यापक ही करता है। अध्यापक मूलभूत आवश्यकताशिक्षा का पूर्दिाता वह राष्ट्रीय मानव संसाधन है जो शिल्पकार के रूप में शिक्षा के मंदिर में कार्य कर समाज एवं देश के विकास में अपना महत्वपूर्ण योगदान देता है। वर्तमान आधुनिक समय की जरूरतों व समस्याओं के समाधान में शिक्षक व शिक्षा का महत्वपूर्ण योगदान है। आधुनिक व प्रतिस्पर्धा के इस दौर में शिक्षा क्षेत्र को भी नई मांगों का सामना करना पड़ रहा है। शिक्षा के क्षेत्र में हो रहे परिवर्तनों के आवेग को आगे बढ़ाने में अध्यापकभी पीछे नहीं हैबल्कि लगातार कार्य कर रहा है। 21वी सदी में बढ़ते वैश्वीकरण के चलते प्रशिक्षित व व्यावसायिक रूप से समृद्ध अध्यापक ही प्रसन्नता पूर्वक शिक्षण कार्य करने में सहायक सिद्ध हो सकते हैं। अध्यापक ही विद्यालय में कक्षा से लेकर समाज मं पूर्ण रूप से व्यवसायिक तरीके से एक साथ कई कार्यों को करने के योग्य व सक्षम होता है। अध्यापक गतिविधि आधारित तथा सहभागिता सीखने हेतु शिक्ष का वातावरण तैयार कर सकता है।

अध्यापकों के लिए नैतिक संहिता विद्यार्थियों के अधिकारों की रक्षा के लिए निर्मित की गई है। अध्यापकों से अपेक्षा की जाती है कि वे अपने सभी विद्यार्थियों के प्रति निष्पक्ष रहे और किसी भी तरह से अपने पद का कोई लाभ न उठाये। उदाहरणार्थ आप विद्यार्थियों से मंहगे उपहार स्वीकार नही कर सकते। ऐसा करके आप पूर्वाग्रह से ग्रसित हो सकते है। आप अपनी व्यक्तिगत मान्यताओं को विद्यार्थियों पर नही थोप सकते क्योंकि वे सम्मोहित श्रोत हैं। आपको सभी विद्यार्थियों के साथ एक व्यावसायिक संबंध रखने की आवश्यकता

है और किसी के साथ बहुत अनौपचारिक और निकट नही होना है। मुख्य तथ्य यह है कि आपको अपनी स्थिति के कारण जो शक्ति प्राप्त है उसका दुरुपयोग अपने विद्यार्थियों पर नही करना है।

अध्यापकों के लिए व्यावसायिक नैतिक संहिता विद्यार्थियों, अभिभावकों,सहकर्मियों और समुदाय के प्रति अपने कर्तव्यों का निर्वहन करने में उन्हें दिशा निर्देश देने के लिए सिद्धांतों की एक रुपरेखा प्रदान करता है। शिक्षण व्यवसाय को सुनिश्चित करने के लिए आवश्यक है कि विद्यालयी अध्यापकों के लिए वर्तमान व्यावसायिक नैतिक संहिता राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान एवं प्रशिक्षण परिषद द्वारा विकसित अध्यापकों के व्यावसायिक कार्यो की मर्यादा में वृद्धि हेतु उन्हें दिशा निर्देश करने का एक प्रयास है।

एक अध्यापक का कर्तवय ह कि वह छात्रों को उनकी सम्पूर्ण क्षमताओं के साथ सीखने के लिए प्रेरित करे,और सामाजिक मूल्यों जैसे कि स्वयं और दूसरो के प्रति सम्मान,ईमानदारी, जिम्मेदारी, सहयोग, निष्ठा, और उत्तरदायित्व निभाना सिखाए। शिक्षकों को विद्यालय के नियमों का पालन करना चाहिए और सभी नियमों को विना किसी भेदभाव के समान रुप से समस्त विद्यार्थियों पर लागू करना चाहिए। अध्यापकों को जानबूझकर छात्रों को हतोत्साहित नही करना चाहिए और छात्रों के बारे में प्राप्त गोपनीय जानकारी को प्रकट नही करना चाहिए।

अध्यापकों को ईमानदार,कानून को मानने वाले नगरिकों व महान व्यक्तियों के साथ ईमानदारी से होना चाहिए व अध्यापक के रुप में सर्वश्रेष्ठ प्रदर्शन के लिए सदैव प्रयत्नशील रहना चाहिए। एक अध्यापक में अपना व्यवसाय स्वीकार करने से पहले सभी आवश्यक शैक्षिक योग्यतायें होनी चाहिए, और अपने नियोक्ता की आवश्यकतानुसार अतिरिक्त प्रशिक्षण प्रमाणपत्र व उन्नत शैक्षिक उपाधी के माध्यम से व्यावसायिक विकास जारी रखना चाहिए। एक अध्यापक को उन उपहारों को स्वीकार नही करना चाहिए जो किसी भी शिक्षण व्यवसाय के निर्णय को प्रभावित कर सकते है। एक अध्यापक को जनता कार्यकमों में अधिकारिक विद्यालयी नीतियों का उल्लंघन नही करना

चाहिए और विद्यालय का प्रतिनिधित्व करने वाली व्यावसायिक क्षमता में किसी भी टिप्पणी से व्यक्तिगत संवादों को स्पष्ट रुप से अलग करना निश्चित करना चाहिए।

एक अध्यापक को यह भी ध्यान रखना चाहिए कि वह सहकर्मियों के बारे में कोई गोपनीय जानकारी न प्रकट करे और जानबूझकर सहकर्मियों या उन विद्यालयों के बारे में गलत बयान नही देने चाहिए और न ही शैक्षिक तरीकों में किसी सहयोगो की पसंद के बारे में असहमति या हस्तक्षेप करे।

एक अध्यापक को कक्षा के परिवेश को स्वीकार करते हुए एक खुला माहौल बनाये रखने का प्रयास करना चाहिए जहां सभी सांस्कृतिक पृष्ठभूमि के विद्यार्थी सहज महसूस करेगे। परिस्थितियों की परवाह किये बगैर अभिभावकों के साथ विद्यार्थियों के संबंध में ईमानदारी से खुले तौर पर संवाद करने की जिम्मेदारी अध्यापकों की भी होती है। एक अध्यापक की यह भी जिम्मेंदारी है कि वह एक्सट्रा करीकुलम विद्यालय गतिविधियों के साथ–साथ बडे पैमाने पर समाज में उसकी एक सकिय भागीदार हो।

एक अध्यापक की सामाजिक योग्यता दूसरों के साथ अच्छी तरह से जुडने की क्षमता व सामाजिक समरसता तथा सामाजिक संबधों को संभालने का कौशल है। अध्यापक को कभी कभी सरल रुप से लोगो के कौशल के रुप में संदर्भित किया जाता है जिसमें स्थितियों और सामाजिक गतिशीलता के बारे में जागरुकता होती है जो उन्हें नियंत्रित करती है और उनकी वाकपटुता शैलियों और रणनीतियों का ज्ञान जो किसी व्यक्ति को उसके उददेश्य को प्राप्त करने व दूसरे से आगे बढ़ने में मदद कर सकती है। अध्यापकों को राष्ट्र निर्माता के रुप में माना जाता है उनसे न केवल बुद्धिमान होने की अपेक्षा की जाती है बल्कि सामाजिक रुप से भी बुद्धिमान व्यक्तित्व की अपेक्षा की जाती है। इसमें आत्म अंर्तदृष्टि की एक निश्चित मात्रा और विद्यार्थियों, अभिभावकों, सहकर्मियों और समाज के साथ मधुर संबध बनाने व अच्छी तरह से कार्य करने के लिए अपनी स्वयं को धारणाओं और प्रतिकिया नमूने की चेतना शामिल है।

एक अध्यापक की व्यावसायिक नैतिकता है कि वह व्यावसायिक दुनिया को संचालित करने वाले नैतिक नियमों और विनियमों को बताता है। वह निगमों या अन्य पेशों का निर्णय लेने के तरीकों का मार्ग प्रशस्त करती है।

व्यावसायिक नैतिकता विशिष्ट व्यवसायों में लोगो के आचारों के मानक या आचार संहिता को प्रदर्शित करना भी है। आचार संहिता में सभी अध्यापकों को विद्यार्थियों से प्रेम रखने तथा भेदभाव रहित एवं सौहार्दपूर्ण परिवेश में लेखन–पठन का कार्य करने की राय दी गई है ताकि शिक्षा का स्तर व छात्रों का प्रर्दशन उत्तम हो, उपयुक्त लक्षणों के अतिरिक्त कुछ अन्य लक्षण भी आदर्श अध्यापकों को लाभ पहुंचाते हैं जैसे प्रयोग एवं अनुसंधान में अभिरुचि,शिक्षण सहायक सामग्री के विनिर्माण तथा प्रयोग में अभिरुचि तथा योग्यता,प्रश्न कौशल,शिक्षण पद्धतियों का ज्ञान ।

1.2–साहित्य समीक्षा :–

1- जोशी रजनी (1991) इस अध्ययन में शिक्षकों की जिम्मेंदारी के सम्प्रत्य के उदय की प्रक्षिति ज्ञात करने का प्रयास किया गया। साथ ही व्यावसायिक जिम्मेंदारी के समप्रत्य की प्रवृत्ति जानने की कोशिश की गई। शोधार्थी द्वारा शिक्षक की जिम्मेंदारी के संबध में अनेक आयोगों एवं समितितियों की अनुशंसा की समीक्षा भी की गई। शिक्षा में व्यावसायिकता के बारे में भी अध्ययन किया गया। शिक्षण के समप्रत्य की आलोचनात्मक विवचना भी की गई। जिससे यह जाना जा सके कि शिक्षक प्रशिक्षकों की व्यावसायिक आवश्यकतायें क्या है। यह भी जानने का प्रयास किया गया कि शिक्षक की प्रभावशीलता को जानने के कौन से तरीके हो सकतें हैं। शोद्यार्थी ने विभिन्न जनरल शोध अभिलेख,शोध पत्रिकायें एवं पुस्तकालय में संबधित पुस्तकों का अध्ययन कर अध्यापकों की जिम्मेंदारी से जुड़े तत्वों का विश्लेषण किया। शोध के प्रमुख निष्कर्षो में जिम्मेंदारी का शाब्दिक अर्थ जानने का प्रयास किया गया। अनेक क्षेत्र में जवाबदेही के समप्रत्यों को जानने की कोशिश की। शिक्षण व्यवसाय में उत्तरदायित्व कम होने के कारण ज्ञात किये गये व्यावसायिक जिम्मेंदारी के

कारणों को खोजा गया, अनुदेशानात्मक एवं जिम्मेदारियों व अध्यापकों का स्वयं का मूल्यांकन कक्षा कक्ष वातावरण जिम्मेंदारी के लिए घटक के रुप में खोजे गये।

2—<u>सितम्बर (2017) डा.पुष्पलता लाल</u> :—

समाज में हर व्यक्ति का अपना एक स्थान होता है, एक कार्यक्षेत्र होता है जिसका चयन वह अपनी शिक्षा दीक्षा और प्रशिक्षण के अनुरुप करता है और वही उसकी सफलता की सीमाओं को तय करता है। व्यक्ति किस क्षेत्र में जाये इसका निर्धारण उसकी प्रारंभिक शिक्षा और शिक्षक के द्वारा ही तय होता हैं। इसलिए आवश्यकता हैं कि शिक्षक चरित्रवान तथा उच्च नैतिकतावाला हो तभी वह अपने शिष्यों में सच्चाई, ईमानारी, सहनशीलता, कर्तव्यनिष्ठा तथा लगन आदि चारित्रिक गुणो का विकास कर सकता है। इस तरह शिक्षक छात्रों के चरित्र निर्माता होते हैं। बाल्यकाल से ही जब अध्ययन के साथ साथ चरित्र निर्माण पर भी जोर दिया जायेगा तब बड़ा होकर व्यक्ति जिस क्षेत्र में जायेगा चाहे चिकित्सा का क्षेत्र हो, अभियंत्रण का क्षेत्र हो, उद्योग या कृषि क्षेत्र हो वह अपना कार्य पूरी ईमानदारी,निष्ठा और लगन के साथ करेगा। इससे वह स्वयं भी सफलता अर्जित करेगा तथा अपने व्यवसाय को भी बुलंदियो के शिखर पर लेकर जायेगा।

3—<u>डा.ऋषिकेश (2019) सरला चौधरी</u> :—

हनुमान गढ जिले के सरकारी व गैर सरकारीउच्च माध्यमिक विद्यालय के अध्यापकां की कार्य के प्रतिजिम्मेंदारी पर अध्ययन किया गया। जिसका उददेश्य माध्यमिक विद्यालय के अध्यापकों की कार्य जिम्मेंदारी का लिंग के आधार पर अध्ययन करना है। अध्ययन निम्न परिकल्पनाओ पर आधारित है।

माध्यमिक विद्यालय के शिक्षकों की कार्य जिम्मेंदारी का लिंग के आधार पर, विद्यालय के प्रकार के आधार पर, स्थानीयता के आधार पर सार्थक प्रभाव नही पाया गया। प्रस्तुत शोध कार्य में हनुमानगढ के सभी माध्यमिक स्कूल शिक्षको में से 100 शिक्षक सरकारी स्कूलों,100 शिक्षक निजी स्कूलो के, इनमें 50 पुरुष व पचास महिलाओ मे विभाजन कर शोध में शामिल किया गया है। शोध

कार्य के उद्देश्यो को पूर्ति के लिए मानकीकृत उपकरणः अध्यापक कार्य जिम्मेंदारी मापनी (डा.प्रतिभा शर्मा) का उपयोग किया गया। शोध में सरकारी व गैर सरकारी माध्यमिक विद्यालयों के अध्यापको की कार्य के प्रति जिम्मेंदारी पर अध्ययन के प्राप्त मध्यमान सार्थकता स्तर 0.01 के स्तर पर प्रभाव पाया गया। अतः हमारी शून्य परिकल्पना सरकारी व गैर सरकारी माध्यमिक विद्यालयों के अध्यापका की कार्य जिम्मेंदारी में कोई सार्थक प्रभाव नही पडता, को अस्वीकार किया जाता है। जिसमें सरकारी व गैर सरकारी माध्यमिक विद्यालयों के ग्रामीण व शहरी,महिला व पुरुष अध्यापकों की कार्य जिम्मेंदारी पर अध्ययन के लिए प्राप्त मध्यमान पर प्रभाव पाया गया। शोध के माध्यम से सुझाव दिये गये कि अध्यापक अपनी शिक्षण कुशलता को बढाकर अपने शिक्षण स्तर को उच्च करने का प्रयास करेगा। अध्यापक व्यावसायिक संतुष्टि को बढाने का प्रयास करेगा,अध्यापक कार्य जिम्मेंदारी के प्रति सजगता उत्पन्न कर सकेगा।

4—<u>डा.एस.अंडाली</u>

सार :— सामाजिक बुद्धिमता दूसरो के साथ अच्छी तरह से जुडने की क्षमता और सामाजिक वातावरण में सामाजिक संबधों को संभालने का कौशल है। कभी कभी सरल रुप से लोगो के कोशल के रुप में संदर्भित किया जाता है जिसमें स्थितियों और सामाजिक गतिशीलता के बारे में जागरुकता शामिल होती है जो उन्हे नियंत्रित करती है और बातचीत शैलियो और रणनीतियो का ज्ञान जो किसी व्यक्ति को दूसरे से निपटने म अपने उददेश्य को प्राप्त करने मे मदद कर सकती है। जैसा कि अध्यापकों को राष्ट्र निर्माता के रुप में माना जाता है उनसे न केवल बुद्धिमान होने की अपेक्षा की जाती है बल्कि सामाजिक रुप से बुद्धिमान के रुप में भी अपेक्षा की जाती है इसमें आम अंर्तदृष्टि की एक निश्चित मात्रा और छात्रो,अभिभावको,सहकर्मियों और समुदाय के साथ सौहार्द्रपूर्ण संबध बनाने के लिए अच्छी तरह से कार्य करने

के लिए अपनी स्वयं की धारणाओं और प्रतिकिया पैर्टन की चेतना शामिल है। इस संदर्भ में अन्वेषक ने भारत के तमिलनाडू के कुड्डालोर जिले में भावी अध्यापकां के बीच सामाजिक बुद्धिमत्ता का अध्ययन किया। अध्ययन के लिये विभिन्न शैक्षणिक संस्थानों के 100 संभावित अध्यापकों को चुना गया था। साधारण याद्यच्छिक प्रतिचयन तकनीक का उपयोग करके मानक सर्वेक्षण पद्धति को अपनाया गया था। भावी शिक्षकों की सामाजिक बुद्धि का अध्ययन करने के लिए ऐन.के.चंदा और उषा गणेशन द्वारा सामाजिक बुद्धि पैमाने का उपयोग किया गया था। अध्ययन के परिणामों से पता चला कि भावी अध्यापकां में उच्च स्तर की सामाजिक बुद्धि होती है। पुरुष और महिला भावी अध्यापकां के बीच सामाजिक बुद्धि मे महत्वपूर्ण अंतर मौजूद है जबकि परिवार के प्रकार के संबध में सामाजिक बुद्धि में कोई महत्वपूर्ण अंतर नही है। साथ ही यह भी पाया गया है कि पुरुष अपने समकक्षों की तुलना में सामाजिक बुद्धि में अपेक्षाकृत अधिक है।

1.3–शाध कार्य का समस्या कथन :–

एक शोधकर्ता अपनी समस्या को एक शीर्षक के रुप में निबद्ध करके आगे शोध कार्य करता है। प्रस्तुत समस्या उच्चत्तर माध्यमिक स्तरोय शिक्षकों से संबधित है। जिसमें शोधार्थिनी नेउच्चत्तर माध्यमिक स्तरीय शिक्षकों के व्यवसायिक उत्तरदायित्व एवं सामाजिक बुद्दि के सन्दर्भ में उनकी व्यावसायिक नैतिकता का अध्ययन करने का निश्चय किया है।

माध्यमिक स्तर के शिक्षकों के व्यावसायिक उत्तरदायित्व एवं सामाजिक बुद्दि के सन्दर्भ में उनकी व्यावसायिक नैतिकता का अध्ययन।

1.4 शोध कार्य में प्रयुक्त प्रत्ययो का परिभाषीकरण :–

(I)- व्यावसायिक उत्तरदायित्वः–

अध्यापक का कार्य केवल शिक्षण करना ही नही है बरन इसके साथ साथ विद्यार्थियों के ज्ञान, उनके कार्यो तथा उनकी प्रगति की जांच करने के लिए उनकी परीक्षा लेना भी उसका एक महत्वपर्ण उत्तरदायित्व है। मूल्यांकन में

अध्यापकों को बिना किसी भेदभाव के निष्पक्ष होकर अपने कार्य को पूर्णनिष्ठा एवं जिम्मेदारी के साथ सम्पादित करना चाहिए।

(II)-सामाजिक बुद्धि–

क – सामाजिक बुद्धि विशेष रुप से मनुष्य की क्षमता से हमारे बड़े मस्तिष्क के उपयोग द्वारा प्रभावशाली ढंग से नकारात्मक, जटिल सामाजिक संबधो पर बातचीत और वातावरण को समझना है।

ख – ये वह सामान्य मानसिक क्षमता है जिससे एक व्यक्ति अन्य व्यक्ति को समझता है और उनके साथ पूर्ण कुशलता के साथ व्यवहार करता है। सामाजिक बुद्धि वाले व्यक्तियों के सामाजिक संबध भी अच्छे होते है जिनसे उन्हे समाज में प्रतिष्ठा प्राप्त होती है।

(III) –व्यावसायिक नैतिकता:–एक शिक्षक का शिक्षण कार्य व्यवसाय के प्रति ईमानदार एवं उत्तरदायी होना जरुरी है। उसे शारीरिक और मानसिक रुप से स्वस्थ व मजबूत होना चाहिए। शिक्षक की अपने विषय में पारंगत होना जरुरी है। तभी वह विद्यार्थियों की समस्याओं का पूर्ण रुपेण समाधान करने व पूछे जाने वाले सवालों का जवाब देने में सक्षम होगा। शिक्षक के पास प्रभावी विचारों के आदान प्रदान करने का कौशल होना भी जरुरी है।

(IV) - माध्यमिक स्तर :– राष्ट्रीय शिक्षा आयोग (1964–66) ने माध्यमिक शिक्षा को निम्न प्रकार से परिभाषित किया है।

माध्यमिक शिक्षा आयोग (कक्षा VII-XII या कक्षा IX–XI तक)

1– अवर माध्यमिक शिक्षा आयोग (कक्षा VII–VIII या IX–Xतक)

2– उच्च माध्यमिक शिक्षा (कक्षा XI–XII तक) माध्यमिक स्तर से तात्पर्य है कि कक्षा 11 व 12 के विद्यार्थियों को उच्च माध्यमिक विद्यार्थियों की संज्ञा दी जाती है। इनकी आयु सामान्यतः 16 से 19 वर्ष होती है।

1.5–आवश्यकता:–

1– वर्तमान परिवेश व प्रतिस्पर्धा के इस दौर में माध्यमिक स्तरोय शिक्षकों का व्यवहार सामान्य तौर पर विद्यार्थियों के साथ अपनत्व तथा लगाव व मित्रतापूर्वक होने के साथ–साथ उन्हे नवीनतम ज्ञान प्रदान करने वाला होना

अत्यंत आवश्यक है। सामान्य तौर पर माध्यमिक स्तर की शिक्षा ग्रहण करने वाले विद्यार्थियों की अवस्था किशोर अवस्था होती है जो अत्यंत नाजुक होती है। इसमें विद्यार्थियों के साथ मधुर व्यवहार एवं अपनेपन के साथ ज्ञान प्रदान करने की अत्यंत आवश्यकता होती है। अतः एक शिक्षक को शिक्षा प्रदान करने के अपने उत्तरदायित्व को ध्यान में रखते हुए समाज के अनुसार नैतिक व्यवहार करना अत्यंत आवश्यक है।

2– वर्तमान समय में देखने को मिल रहा है कि अभिभावको का रुझान सरकारी माध्यमिक विद्यालयों की ओर लगातार कम होता जा रहा है। अभिभावक अपने बच्चो को सरकारी उच्तर माध्यमिक विद्यालयो में प्रवेश दिलाने से बच रहे है। इतना ही नही बच्चे भी सरकारी विद्यालयों में प्रवेश लेना नही चाहते है। आधुनिकता के इस दौर में यह आवश्यक हो जाता कि सरकारी उच्तर माध्यमिक विद्यालयों के शिक्षकों के व्यावसायिक उत्तरदायित्व एवं सामाजिक बुद्दि के संदर्भ में उनकी व्यावसायिक नैतिकता का अध्ययन किया जाये। जिससे पता लग सके कि आखिर अभिभावक व बच्चे सरकारीउच्तर माध्यमिक विद्यालयों में प्रवेश लेने से बचते क्यो नजर आ रहे है। इन संपूर्ण परिस्थितियों को देखते हुए शोधार्थिनी को

“ माध्यमिक स्तर के शिक्षकों के व्यावसायिक उत्तरदायित्व एवं सामाजिक बुद्दि के संदर्भ में उनकी व्यावसायिक नैतिकता का अध्ययन” शीर्षक पर अध्ययन करने की आवश्यकता महसूस हुई है।

1.6 उद्देश्य :–

1– माध्यमिक स्तरोय शिक्षकों के व्यावसायिक उत्तरदायित्व का अध्ययन करना

2– माध्यमिक स्तरीय शिक्षकों की सामाजिक बुद्दि का अध्ययन करना।

3– माध्यमिक स्तरीय शिक्षकोंकी व्यावसायिक नैतिकता का अध्ययन करना

4– माध्यमिक स्तरीय शिक्षकों के व्यावसायिक उत्तरदायित्व एवं सामाजिक बुद्दि के बीच सम्बन्ध का अध्ययन करना।

5– माध्यमिक स्तरीय शिक्षकों के व्यावसायिक उत्तरदायित्व के सन्दर्भ में उनकी व्यावसायिक नैतिकता का अध्ययन करना।

6– माध्यमिक स्तरीय शिक्षकों की सामाजिक बुद्वि के सन्दर्भ मे व्यावसायिक नैतिकता का अध्ययन करना।

7– माध्यमिक स्तरीय शिक्षकों के व्यावसायिक उत्तरदायित्व तथा सामाजिक बुद्वि का उनकी व्यावसायिक नैतिकता पर प्रभाव का अध्ययन करना।

8– माध्यमिक स्तरीय शिक्षकों के व्यावसायिक उत्तरदायित्व एवं सामाजिक बुद्वि का उनकी व्यावसायिक नैतिकता पर पाये जाने वाले प्रभाव की सार्थकता एवं उपयोगिता का अध्ययन।

1.7 परिकल्पना :–

1– माध्यमिक स्तरीय शिक्षकों के व्यावसायिक उत्तरदायित्व सार्थक रुप से उच्च नही होंगें।

2– माध्यमिक स्तरीय शिक्षकों की सामाजिक बुद्वि सार्थक रुप से उच्च नही होगी।

3– माध्यमिक स्तरीय शिक्षको की व्यावसायिक नैतिकता सार्थक रुप से उच्च नहीं होगी।

4– माध्यमिक स्तरीय शिक्षकों के व्यावसायिक उत्तरदायित्व एवं सामाजिक बुद्वि के बीच कोई सार्थक सहसम्बंध नहीं होगा

5– माध्यमिक स्तरीय शिक्षकों के व्यावसायिक उत्तरदायित्व एवं व्यावसायिक नैतिकता के बीच कोई सार्थक सहसम्बंध नहीं होगा।

6– माध्यमिक स्तरीय शिक्षकों की सामाजिक बुद्धि एवं व्यावसायिक नैतिकता के बीच कोई सार्थक सहसंबंध नही होगा।

7–(क)–माध्यमिक स्तरीय शिक्षकों के व्यावसायिक उत्तरदायित्व का उनकी व्यावसायिक नैतिकता पर प्रभाव में कोई सार्थक अंतर नहीं होगा

(ख)– माध्यमिक स्तरीय शिक्षकों के व्यावसायिक उत्तरदायित्व का उनकी सामाजिक बुद्धि पर प्रभाव में कोई सार्थक अंतर नही होगा।

1.8–परिसीमाये :–

1– प्रस्तुत शोध कार्य में केवल माध्यमिक विद्यालयों के शिक्षकों को सम्मलित किया गया है।

2– प्रस्तुत शोध कार्य में केवल बिजनौर जिले के माध्यमिक विद्यालयों के शिक्षकों को सम्मलित किया गया है।

3– प्रस्तुत शोध कार्य में केवल 400 शिक्षकों को सम्मलित किया गया है जिसमें 200 पुरुष शिक्षकों एवं 200 महिला शिक्षकों को सम्मलित किया गया है।

4– प्रस्तुत शोध कार्य में केवल आंकणा संकलन के लिये शिक्षकों के व्यवसायिक उत्तर दायित्व एवं सामाजिक बुद्धि मापन के लिये प्रमाणिक शोध उपकरणों का उपयोग किया जायेगा। जबकि शिक्षकों की व्यावसायिक नैतिकता के मापन हेतु शोधार्थिनी तथा शोध पर्यवेक्षक द्वारा निर्मित प्रश्नावली का प्रयोग किया जायेगा।

1.9–अनुसंधान की विधि–

ब्राउडी (1963)–विधि के कार्यो के अनुकम की नियमित संरचना को निर्देश देती है जो साधारणतः दिशा के द्वारा निर्दिष्ट होता है। प्रस्तुत शोध अध्ययन का उददेश्य माध्यमिक स्तर केशिक्षकों के व्यावसायिक उत्तरदायित्व एव सामाजिक बुद्वि के संदर्भ में उनकी व्यावसायिक नैतिकता का अध्ययन करना है। अतः इस उददेश्य पूर्ति हेतु शोधार्थिनी द्वारा जो अनुसंधान विधि अपनाई गई है वह इस प्रकार है–

वास्तव में अनुसंधान की प्रकिया को संपादित करने का एक ढंग है जो समस्या की प्रकृति द्वारा निर्धारित होती है। प्रस्तुत शोधकत्री जो कि एक सामाजिक शाध कार्य है इसके समाधान हेतु सर्वेक्षण विधि अथवा सामाजिक सर्वेक्षण का प्रयोग किया गया है। सर्वेक्षण केवल वर्तमान की अच्छाईयों या निर्बलताओं की सूचनाओं के बारे में ही सहायता नही करता है अपितु परिवर्तन लाने हेतु सुझाव भीदे सकता है यही कारण है कि उपरोक्त उददेश्य पूर्ति हेतु वर्णात्मक सर्वेक्षण विधि ही उपयुक्त है।

वर्तमान शोध अध्ययन का उद्देश्य माध्यमिक स्तर केशिक्षकों के व्यावसायिक उत्तरदायित्व एव सामाजिक बुद्वि के संदर्भ में उनकी व्यावसायिक नैतिकता का अध्ययन करना है। जिसमें एक ही समय में बहुत से शिक्षकों के विषय में आकड़े प्राप्त करना है व उनका अर्थापन भी करना है। अतः सर्वेक्षण विधि ही सर्वाधिक उपयुक्त प्रतीत हुई।

1.10—जनसंख्या :—

प्रस्तुत शोध कार्य में केवल बिजनौर जिले के माध्यमिक विद्यालयों के शिक्षकों को सम्मलित किया गया है।

1.11—न्यादर्श :—

जनसंख्या की सभी इकाईयों का अध्ययन संभव नही है। यदि ऐसा किया जाये तो अत्यधिक धन व श्रम व्यय होगा और साथ ही कार्य भी त्रुटिपूर्ण होगा। अत इसके लिए सर्वप्रथम न्यादर्श का चयन किया जाता है। प्रस्तुत शोध कार्य के परिपेक्ष में 400,शिक्षकों का चयन यादृच्छिक विधि से किया गया है।

1.12—प्रस्तुत उपकरण :—

शोधकत्री को शोध समस्याओं के संदर्भ में उपकरण की आवश्यकता थी जिसके द्वारा शिक्षकों के व्यावसायिक उत्तरदायित्व, सामाजिक बुद्वि एवं उनकी व्यावसायिक नैतिकता से संबधित परीक्षणों का सर्वेक्षण किया जा सके अतः प्रस्तुत शोध समस्या के संबध में डा प्रतिभा शर्मा. द्वारा निर्मित व्यावसायिक उत्तरदायित्व प्रपत्र, सामाजिक बुद्धि ज्ञात करने के लिये अंतरा देय एवं नीलरतन राय द्वारा निर्मित एवंव्यावसायिक नैतिकता से संबधित स्वनिर्मित प्रपत्रा का प्रयोग करेगी।

1.13—प्रयुक्त सांख्यिकी विधिया :—

पस्तुत शोध कार्य में शोध कत्रि द्वारा प्रदत्तों के विश्लेषण एवं परिकल्पनाओं के परीक्षण के लिए मध्यमान, मानक विचलन एवं टी परीक्षण व गुणन आघूर्ण सह संबंध विधि का उपयोग किया गया है।

1.14–परिणाम निष्कर्ष एवं सुझाव :–

प्रस्तुत शोध में प्राप्त प्रदत्तो के सांख्यकीय विश्लेषण से प्राप्त परिणामो के आधार पर निष्कर्ष निकाला जायेगा एवं भविष्य हेतु सुझाव सुनिश्चित किये जायेगे।

1.15–संदर्भ ग्रन्थ सूची:–

1– मिश्र अरुण कुमार (1986) शिक्षा का व्यवसायीकरण भारतीय आधुनिक शिक्षा श0शै0अ0प्र0प0 वर्ष चतुर्थ अंक प्रथम जुलाई ।

2– राओ,बीके (1986),वोकेशनल एजुकेशन, स0पी0एच0 पब्लिशिंग कारपोरेशन नई दिल्ली

3– भटनागर ए0वी मीनाक्षी (2001) शिक्षा और मनोविज्ञान में मापन और मूल्यांकन ,सूर्या प्रकाशन,मेरठ पृष्ठ संख्या –316–317 ।

4– मिश्र अरुण कुमार (1986) शिक्षा का व्यवसायीकरण ,भारतीय आधुनिक शिक्षा श0शै0अ0प्र0प्र0 वर्ष चतुर्थ,अंक प्रथम जुलाई ।

5– मिश्र, अरुण कुमार (1986), व्यवसायिक शिक्षा की चुनौती, शैक्षिक पलाश,राज्य शिक्षक प्रशिक्षण मंण्डल म0प्र0 वर्ष 21,अंक 7–9 जनबरी–मार्च।

6– राओ,बी0के0 (2003), वोकेशनल एज्यूकेशन, ए0पी0एच0पब्लिशिंग कारर्पोरेशन,नई दिल्ली

7– कपिल डा0एच0के0 (2010) अनुसंधान विधिया–व्यवहारिक विग्रानो में, हर प्रसाद भार्गव पुस्तक प्रकाशक, 4/230,कचहरी घाट आगरा ।

8– त्रिपाठी ?,जगपाल (2007)मनोविज्ञान एवं शिक्षा में शोध पद्धतिया, एचपी0 भार्गव पुस्तक प्रकाशक,4/230,कचहरी घाट आगरा ।

9– त्रिपाठी,प्रो0लाल बचन एवं अन्य (2008) मनोवैज्ञानिक अनुसंधान पद्धतिया एचपी0 भार्गव पुस्तक प्रकाशक,4/230,कचहरी घाट आगरा।

10– सिंह अरुण कुमार (2009) मनोविज्ञान,समाज शास्त्र तथा शिक्षा में शोध विधियां मोतीलाल बनारसीदास, पटना एवं बाराणसी ।

11– सिंह अरुण कुमार (2001)शिक्षा मनोविज्ञान,पटना,भारती भवन पब्लिर्सस एंड डिस्ट्रीब्यूटर्स।

12– सिंह अरुण कुमार (2001) संज्ञानात्मक मनोविज्ञान, बाराणसी, मोतीलाल बनारसीदास पब्लिशर्स एंड डिस्ट्रीब्यूटर्स ।

13–सिंह अरुण कुमार (2001) मनोविज्ञान, पटना,भारती भवन,पब्लिशर्स एंड डिस्ट्रीब्यूटर्स ।

प्रियंका उपाध्याय